दिनांक :- 07-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part (II) प्रतिष्ठा द्वितीय खण्ड इतिहास
(History Honours B.A Part (II)

(ii) साहित्यिक स्त्रोत :- 1. अतीत की पुस्तकें हाथ से लिखे होने के कारण पाण्डुलिपि कहा जाती हैं। ये पाण्डुलिपियां प्रायः ताड़पत्रों अथवा भोज-पत्र पर लिखि मिलती हैं।

प्राचीन भारत साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है।

(1) धार्मिक साहित्य (2) धर्मेत्तर साहित्य

(1) धार्मिक साहित्य :- धार्मिक साहित्य के अंतर्गत मुख्यतः ब्राह्मण साहित्य (हिन्दू धार्मिक साहित्य) बौद्ध साहित्य एवं जैन साहित्य शामिल किए जाते हैं।

ब्राह्मण साहित्य :- इसके अंतर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक वेदांग उपनिषद सूत्र साहित्य, स्मृतियाँ, पुराण, रामायण तथा महाभारत आते हैं। ये ग्रंथ प्राचीन भारत की राजनीति का

सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते है। प्राचीनतम ब्राह्मण साहित्य वेद:- वेदो की संख्या चार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद:- इन चारो वेदो को सामूहिक रूप से संहिता कहा जाता है। ऋग्वेद को 1500-1000 ई० पू० के लगभग का तथा यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद को 1000-1500 ई० पू० के लगभग का माना जाता है। ऋग्वेद में मुख्यतः देवताओं की स्तुतियाँ, यजुर्वेद में यज्ञो के नियम तथा विधि-विधानों का संकलन सामवेद में यज्ञो के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह तथा अथर्ववेद में धर्म, औषधि, प्रयोग, रोग निवारण, तंत्र-मंत्र जादू टोना जैसे अनेक विषयों का वर्णन है।

ब्राह्मण ग्रंथ

सभी वेदो के अलग अलग ब्राह्मण ग्रंथ है, जो गद्य में है और कर्मकाण्ड की पद्धति का उल्लेख करते है। ब्राह्मण ग्रंथो की रचना ऋषियों द्वारा की गई है। यह वेदो की सरल तथा गद्यात्मक व्याख्या है। ऐतरेय ब्राह्मण प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है।

Scanned with CamScanner

आरण्यक :- जंगलों में लिखे गए ग्रंथों को आरण्यक कहा गया। आरण्यक ग्रंथों की विषय-वस्तु आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिन्तन है। इनकी रचना ब्राह्मण ग्रंथों के बाद हुई है। आरण्यक ग्रंथों को विभिन्न वेदों से जोड़ा गया है। अथर्ववेद का कोई आरण्यक ग्रंथ नहीं है।

वेदांग :- वेदों का अर्थ लौकिक प्रकार से समझने के लिए वेदांगों की रचना हुई। वेदांगों की संख्या छः है। ये हैं- शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष।

उपनिषद :- ये वैदिक ग्रंथों के अंतिम भाग हैं, जिनमें अध्यात्म तथा दर्शन के गूढ़ रहस्यों का विवेचन हुआ है। वेदों का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषदों को वेदांत भी कहा है। उपनिषदों की संख्या 108 है, जिनमें बृहदारण्यक, कठ, छान्दोग्य इत्यादि प्रमुख है।

सूत्र साहित्य :- सूत्रों में मनुष्यों के कर्तव्यों, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है। सूत्रों की संख्या तीन है- श्रौत सूत्र, गृह सूत्र, धर्म सूत्र।

Scanned with CamScanner